05/2018
APRIL' 18
Wk-15 Day 105-260
15
SUNDAY

B.A. III Hindi Hons.

'काव्य हेतु' का अंतिम भाग

डॉ॰ सतीश चन्द्र पाठक
एस॰ एस॰ कॉलेज, जहानाबाद।

फ्रायड ने काव्य-हेतु पर विचार करते हुए दमित काम-वासनाओं को काव्य के मूल में स्वीकार किया है। उनकी इन बातों को संपूर्णता में स्वीकार करना तो संभव नहीं है किन्तु साहित्य के अवलोकन के क्रम में इसे पूर्णतः नकार भी नहीं सकते। काव्य में जो अनेक रसों की चर्चा की गयी है उनमें शृंगार रस एक प्रधान रस है जिसके मूल में दमित कामवासनाओं को स्वीकार किया जा सकता है।

एडलर ने क्षति-पूर्ति को काव्य का हेतु माना है। उनके अनुसार मानव जीवन विभिन्न प्रकार के अभावों से ग्रस्त रहता है ये अभाव उनके भीतर एक हीन ग्रंथि का निर्माण करते हैं. उन्हीं ग्रंथियों को दबाने के लिए या हीन ग्रंथियों पर हावी होने के लिए मनुष्य काव्य की रचना करता है। विद्वानों का एक वर्ग इस सिद्धान्त को आंशिक रूप से स्वीकार करते हैं; किन्तु एक वर्ग इसे पूर्णतः नकारता है। उनकी मान्यता है कि हीनता से ग्रस्त व्यक्ति काव्यसृजन जैसे कर्म कर ही नहीं सकता। यह सच भी है कि काव्य रचना में जिस मानसिक एवं संवेदनात्मक स्थिति की आवश्यकता होती है वह हीन ग्रंथि से ग्रस्त व्यक्ति में उपलब्ध हो ही नहीं सकती। अतः एडलर का यह सिद्धान्त स्वीकार्य नहीं हो सकता।

युंग ने एडलर के ठीक विपरीत नेतृत्व कामना को काव्य का हेतु माना है। उनकी मान्यता है कि मनुष्य दो प्रकार के होते हैं — (i) अन्तर्मुखी और (ii) बहिर्मुखी। अन्तर्मुखी व्यक्ति अध्यात्म की ओर उन्मुख होता है और मुक्तक या प्रगीत काव्य की रचना में उसकी रुचि होती है जबकि बहिर्मुखी

का बुद्धिपरक पहलू भाव से अपेक्षाकृत विशाल होता
परिणामतः वह उपन्यास या महाकाव्य के लेखन में प्र
होता है युग की इस मांग का सहज ही स्वीकार
किया जा सकता। काव्य-लेखन का प्रमुख स्थापन
क्या सम्बन्ध हो सकता है? ये दोनों दो बातें हैं। य
कारण है कि युग के ~~सत्~~ सिद्धान्त को भी साहित्य में
आंशिक मान्यता ही मिल सकी है विशेषतः भारतीय
दृष्टि से तो बिलकुल ही नहीं।

विलियम हडसन आत्माभिव्यंजना, ह
मनुष्य के कार्यों के प्रति अनुराग, वर्तमान जगत त
काल्पनिक जगत के प्रति अनुराग एवं सौन्दर्यानुभूति क
काव्य का प्रेरक तत्व मानता है। हडसन के इस का
सिद्धान्त को सार्वजनिक स्वीकृति प्राप्त ~~हुई~~ हुई है
यह सत्य है कि आत्माभिव्यक्ति ही काव्य के मूल
है, सौन्दर्यानुभूति तथा जगत के प्रति अनुराग उसके
अंगमात्र है।

~~संक्षेप~~ निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि
व्यक्तित्व एवं काव्य का अविच्छिन्न सम्बन्ध है। जब
हृदय में संवेदनाओं का ज्वार उठता है तब आत्मा-
भिव्यक्ति की आवश्यकता अनुभव होती है - यहीं से
काव्य की पृष्ठभूमि का आरंभ होता है। डॉ॰
नगेन्द्र ने आत्माभिव्यक्ति को ही काव्य या साहित्य का

मूल तत्व माना है – "आत्माभिव्यक्ति ही वह मूल तत्व है जिसके कारण कोई व्यक्ति साहित्यकार और उसकी कृति साहित्य बन पाती है।" डॉ. नगेन्द्र के इस विचार में हम इतना अवश्य जोड़ सकते हैं कि आत्माभिव्यक्ति के साथ प्रतिभा भी अनिवार्य है।